Date 18/03/17 PG Sem-2 (1) 25 April

3. औद्योगिकरण
(Industrialization)

भूखमरी तथा शोषण विश्व भर की जनजातियों की मुख्य समस्या है आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि हमारी कुछ जनजातियाँ ऐसे क्षेत्रों में रहती है जो वनो तथा खानिजों जैसी प्राकृतिक सम्पादाओंसे बड़ी प्रभावित पड़े है। स्वतंत्रता के बाद कच्चे माल, विद्युत, सिंचाई की विस्तृत परियोजनाओं में इन प्राकृतिक सम्पदाओं का प्रयोग किया गया, राउरकेला, भीलाई, हीराकुण्ड परियोजनाओं इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

जनजातीयों का आर्थिक उत्थान इन विकास योजनाओं का तर्कसंगत परिणाम होना चाहिए था परन्तु ऐसा नहीं हुआ। इन सीधे-सादे लोगों की भूमि ले ली गई तथा इन्हें इस भूमि के बहुत कम दाम दिये गये। जो धन इन्हें भूमि के बदले मिला उसे इन लोगों ने मदिरापान तथा अन्य जनजातीय उत्सवों में खर्च कर दिया। इस प्रकार वे अधिकतर परिवार भूमि-रहित तथा कंगाल हो गए। इन परियोजनाओं में जिस प्रकार के प्रशिक्षित लोगों की आवश्यकता थी वैसा प्रशिक्षण जनजातीय युवाओं को नहीं दिया गया। प्रारंभ में अवश्य इन्हें कुछ रोजगार मिला परन्तु निर्माण कार्य समाप्त हो जाने पर यह लोग बेकार हो गए। इसका कारण था इनका प्रशिक्षित न होना, ऐसी स्थितियों में बाहरी लोग इन क्षेत्रों में आ गए तकनीकी रूप से प्रशिक्षित न होने के कारण इन जनजातीयों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। ऐसी योजनाएँ निश्चित रूप से देश के लिए अत्यंत लाभकारी है परन्तु जनजातीय लोगों की हितों की उपेक्षा करना भी न्याय संगत नहीं है।

भारतीय जनजातीयों पर टिप्पणी करते हुए कार्ल-मार्क्स ने सत्य ही कहा है कि

Date ___/___/_____

" औद्योगिकता की प्रक्रिया में ये लोग अपने मौलिक वातावरण एवं स्थानों से वंचित हो जाते हैं। "तथा इस आधुनिकीकरण से उन्हे कोई लाभ नही मिलता, इसके कारण इन जनजातीयों की बाधाओं तथा कठिनाईयों में वृद्धि ही होती है। " जनजातीय क्षेत्रों में औद्योगिकरण के कारण उत्पन्न समस्याओं को निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है :—

1. विस्थापन तथा पुर्नवास :— जनजातीय क्षेत्रों के औद्योगिकरण से जनजातीय आर्थिक व्यवस्था में सुधार होगा, यह विचार मिथ्या ही सिद्ध हुआ है। जनजातीय क्षेत्रो की प्रमुख औद्योगिक योजनाओं ने न केवल उन्हे अपने घरों से बेघर कर दिया, बल्कि उन्हे किसी प्रकार का रोजगार भी नहीं दिया, जिससे की ये लोग अपने पंरपारिक वातावरण में जीवन-यापन कर सकें। यहाँ तक कि सार्वजनिक उपक्रमों के अन्तर्गत आने वाली योजनाओं के प्रशासकों ने उन्हे भूमि का दाम देकर अपना कथित 'कर्तव्य' पूरा कर दिया भूमि के बदले में प्राप्त धन शीघ्र ही समाप्त हो गया, तथा इस औद्योगिकरण तथा विकास ने इन सीधे-सादे जनजातीय लोगों को उनके अपने ही क्षेत्र में निराश्रित कर दिया।

झारखण्ड के मैथान, कोनार, पचेत जैसी प्रमुख विद्युत परियोजनाएँ उड़ीसा की मंडीरा, मार्थकुण्ड, हीराकुण्ड परियोजनाएँ, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश तथा झारखण्ड की राउरकेला दुर्गापुर, भिलाई, राँची तथा जमशेदपुर की स्टील परियोजनाएँ ऐसी कुछ परियोजनाएँ है जो जनजातीय विस्थापन का कारण बनी।

जनजातियों के पुर्नवास की योजना की असफलता की कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित है :—

1. इन जनजातीय लोगों ने प्राप्त वैकल्पिक सुविधाओं का लाभ नहीं उठाया। जनजातीय युवक औद्योगिक रोजगार तथा आसानी से प्राप्त धन के प्रति अधिक

Page No. ____

Date ___/___/___

आकर्षित हुए।

b. प्रशासन द्वारा दान में दी गई कृषि भूमि में सिंचाई की उचित व्यवस्था न होनें के कारण उसकी उपज परिवारों के लिए पर्याप्त नहीं थी।

c. दान में मिली धन राशि को उत्पादक कार्यों में नहीं लगाया। इसका अधिक उपयोग दैनिक खर्च में होता है।

2. मनोवैज्ञानिक सामाजिक सांस्कृतिक सामांजस्य :-

औद्योगिकरण से समस्त जनजातीय क्षेत्रों में सभी प्रकार के लोगों का आगमन आरंभ हो गया, जिसके कारण जनजातीयों की शुचिता पर आघात पहुँचा है। दास एवं बनर्जी 1962 के अनुसार ?? औद्योगिकरण से निम्न ऐसे परिवर्तन होते हैं जिनसे जनजातीय लोगों को संमाजस्य स्थापित करना पड़ता है :-

i. पीढ़ियों से कृषि प्रगति के जनजातीय लोगों ने कारखानों के दैनिक जीवन को पूर्णत: आत्मसात नहीं किया, ये लोग केवल आर्थिक उद्देश्यों से ही इन कारखानों में काम करते थे।

ii. सदियों से ऋतुओं के अनुसार कार्य करने वाले जनजाति कृषक कारखानों के उबाऊ दैनिक कार्य को पसन्द नहीं करते जिसका प्रभाव उनकी उत्पादन क्षमता पर पड़ता है।

iii. औद्योगिकरण ने व्यक्तिगत प्रवृत्तियों को बढ़ा दिया जिसके कारण पारस्परिक संबंधों की प्रगाढ़ता में कमी आई, आर्थिक दुर्बलता तथा कम सुविधाएँ इस प्रकार की प्रवृत्ति के मुख्य कारण है।

iv. बड़ों के पारस्परिक अधिकारों तथा उनके सम्मान में कमी आई।

v. युवा पीढ़ी द्वारा विवाह सम्बन्धी पारंपरिक नियमों का उल्लंघन आम बात हो गयी है। कभी-कभी तो ये युवा अपनें समुदाय से बाहर विवाह करते हैं।

Scanned with CamScanner

तलाक की घटनाएँ बढ़ गयी है।

vi. आर्थिक दुर्बलता तथा समय की कमी के कारण विवाह परम्परिक रीति-रिवाजों को कम कर दिया गया है।

vii. अलग-अलग क्षेत्रों के विभिन्न समुदायों से सम्पर्क स्थापित होने के कारण इन जनजातियों की विचारधारा विस्तृत हुई है। तथा इनके अंधविश्वासों और रीति-रिवाजों से सम्बन्धित कड़ी मान्यताओं में कमी आयी है इसके अतिरिक्त अन्य दूसरे समुदाय तथा उनकी संस्कृति को समझने तथा उसे अपनाने में इन्हें सहायता मिली है।

viii. देश की अन्य जनसंख्या के साथ धीरे-धीरे घुल-मिल रहे है इन जनजातिय लोगों की परम्परागत सांस्कृतिक मान्यताएँ भी धीरे-धीरे लुप्त हो रही है।

इस प्रकार इन सांस्कृतिक सम्पर्कों का नतीजा सकारात्मक, नकारात्मक दोनों रूप से निकला, श्रम की इकाई तथा तरीका एक और पक्ष है जिसे ये जनजातिय लोग संमाजस्य स्थापित करने का प्रयास कर रहे है।

इनकी पारम्परिक कृषि अर्थव्यवस्था में पूरा परिवार एक साथ मिलकर ~~श्रमिक इकाई~~ एक श्रमिक इकाई के रूप में कार्य करता था जबकि कारखानों में रहकर अलग-अलग कार्य करते है। मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संमाजस्य से सम्बन्धित आधिक आँकड़े उपलब्ध नहीं है जिसके कारण इस पक्ष पर औद्योगि-करण के प्रभाव पर सही-सही अनुमान लगाना कठिन है परन्तु यह बिल्कुल स्पष्ट है कि एक सीमित तथा पंरपारिक समाज के लोगों को शिक्षा तथा संसाधनों के बिना ही एक सार्वभौम सभ्यता तथा ~~जह~~ बृहत समाज के साथ समंजस्य स्थापित करने पर विवश किया जा रहा है। ऐसी स्थितियों में ये लोग अपनी पहचान बोध खोते जा रहे है तथा इसे बचाने में असमर्थ है नुकसान का यह एहसास उनमें केवल अलग अलगाँव-वाद एवं आक्रोश ही उत्पन्न करता है।

Stop

Scanned with CamScanner